"छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की भूमिका"
(धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में)

अध्याय प्रथम

प्रस्तावना

1.1 भूमिका

1.2 विषय चयन की आवश्यकता एवं महत्व

1.3 शोध अध्ययन की परिकल्पना

1.4 अध्ययन का उद्देश्य

1.5 अध्ययन क्षेत्र

1.6 अध्ययन अवधि

1.7 शोध प्रविधि

1.8 अध्ययन की सीमाएँ

1.9 शोध प्रविधि की रूपरेखा

अध्याय द्वितीय

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय तृतीय

छत्तीसगढ़ का भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिचय

3.1 **भौगोलिक स्थिति**

3.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.1.2 भू–गर्भीय संरचना एवं उच्चावय

3.1.3 जलवायु

3.1.4 वन

3.1.5 खनिज

3.1.6 कृषि

3.2 आर्थिक संरचना

3.2.1 उद्योग

3.2.2 वाणिज्य

3.2.3 यातायात

3.3 सामाजिक एवं जनांकिकीय संरचना

3.3.1 जनसंख्या

3.3.2 रोजगार एवं बेरोजगार जनसंख्या

3.3.3 शिक्षा

अध्याय चतुर्थ

छत्तीसगढ़ में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड

4.1 राज्य गठन के पूर्व एवं राज्य गठन के पश्चात्

4.2 छत्तीसगढ़ खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित कार्यक्रम

4.3 छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की भूमिका

अध्याय पंचम

धमतरी जिले की आर्थिक भौगोलिक एवं जनांकिकीय विशेषताऍ

5.1 भौगोलिक स्थिति

5.1.1 स्थिति एवं विस्तार

5.1.2 भौगोलिक विशेषता

5.1.3 प्रशासनिक व्यवस्था

5.1.4 वन सम्पदा

5.1.5 खनिज सम्पदा

5.1.6 कृषि

5.1.7 जलवायु

5.1.8 विद्युत एवं ऊर्जा

5.1.9 सिंचाई

5.2 आर्थिक एवं जनांकिकीय स्थिति

5.2.1 जनसंख्या

5.2.2 वर्गवार जनसंख्या

5.2.3 गरीबी रेखा के नीचे की जनसंख्या

5.2.4 शिक्षा

5.2.5 कार्यरत जनसंख्या

5.2.6 ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

5.2.7 उद्योग

5.2.8 व्यापार एवं वाणिज्य

5.2.9 परिवहन एवं संचार

5.2.10 ग्रामीण विकास

अध्याय षष्ट्म

धमतरी जिले में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित कार्यक्रमों का संक्षिप्त परिचय

अध्याय सप्तम्

धमतरी जिले में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की चयनित योजनाओं का क्रियान्वयन

7.1 प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम

7.2 परिवार मूलक योजना

7.3 कारिगर प्रशिक्षण योजना

अध्याय अष्ट्म

धमतरी जिलें में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की चयनित योजनाओं का मूल्यांकन

8.1 प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम का मूल्यांकन

8.2 परिवार मूलक योजना का मूल्यांकन

8.3 कारिगर प्रशिक्षण योजना का मूल्यांकन

8.4 चयनित योजनाओं का धमतरी जिले के आर्थिक विकास में योगदान

अध्याय नवम्

समस्या एवं सुझाव

अध्याय दशम्

उपसंहार

परिशिष्ट

1. **प्रश्नावली**
2. **अनुसूची**
3. **संदर्भ ग्रथ सूची**

****

प्रस्तावना :—

भारत गावों का देश है, यहॉ की अर्थव्यवस्था मिश्रित होने के कारण ग्रामीण विकास में कृषि क्षेत्र की भूमिका हमारे अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव डालती है। आज हम नवीन उद्योगों के विकास में आगे बढ़ते जा रहे है। लेकिन हमारी परम्परागत उद्योगों लघु एवं कुटीर उद्योगों की अहम भूमिका रही है।

आदिकाल में मनुष्य वनों में जीवन यापन करता था उनकी आवश्यकताऍ सीमित थी। प्यास लगने पर बहती सरिताओं से अपनी प्यास बुझाता और भूख लगने पर वृक्षों के फल खाकर अपनी भूख शांत करता था। परन्तु धीरे–धीरे मानव का विकास हुआ तब वह कृषि एवं पशुपालन का व्यवसाय आरम्भ किया। कपास की उत्पादन ने विकास के पथ पर मानव को कपड़े निर्माण करने की ओर प्रेरित किया। इसी प्रकार लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धे पनपने लगे। मानव कम पूॅजी में अपने घरों में बैठकर वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखते हुए अपनी जीविका अर्जन के कार्य करता जैसे चटाई बुनना, बर्तन बनाना, मुर्गीपालन आदि कुटिर उद्योग कहलाते हैं। यह उद्योग मुख्य रूप से गांवों में विकास है इन्हे ग्रामोद्योग का पर्याय माना गया ।

लघु एवं कुटीर उद्योग का काल क्रमानुसार विकास :—

प्राचीन युग लघु एवं कुटीर उद्योग का भारतीय इतिहास में स्वर्णमयी युग था, हमारे देश में कुटीर उद्योग से निर्मित पदार्थ से देश के मनुष्यों की आवश्यकता की पूर्ति नही होती थी वरण वस्तु विदेशों में भेजी जाती थी, मध्य युग के आगमन पर घरेलू धन्धों की दशा ठीक रही। उस काल में बड़े–बड़े स्थानों पर कारखानों में लोहा, बर्तन, चमड़े का सामान आदि बनाये जाते थे। ब्रिटिश युग के आगमन से लघु एवं कुटी उद्योगों को बड़ा धक्का लगा विदेशों से निर्मित माल स्वावलम्बी भारत में आकर बिकने लगा। जिससे देश के लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धों का अंत होने लगा ।

आधुनिक युग में लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धों का महत्व भारतीय अर्थव्यवस्था के एक अभिन्न अंग के रूप में स्थापित हो चुका है। ये उद्योग मुख्यतः गावों में विकसित हुए है। ग्रामीणों की आवश्यकता एवं भौगोलिक वातावरण के कारण साधनों की उपलब्धता इसके विकास की स्थिति को स्पष्ट करता है, उदाहरण के लिए समुद्री किनारों पर बसे ग्रामीणों के लिए सिप आधारित उद्योग का विकास संभव है।

खादी की खोज महात्मा गांधी द्वारा की गई पर इसकी जड़े भारतीय सभ्यता में समाहित थी। वैदिक काल में आर्य खुद अपने लिए कपड़े बुनते थे, ये हाथ के बुने होते थे,

और शादी–विवाह के समय दुल्हन को यह ध्यान दिलाने के लिए खादी चरखा भेंट किया जाता था कि उन्हे कपड़ों के मामलों में स्वावलंबी बनना है। ऋग्वेद में खादी का जिक्र करते हुए कहा गया – ऐसा कपडा बुनों और रंगो जो गांठरहित हो, जिसका रंग चटक हो और जिसके जरिये सतत् आनुवांशिक प्रक्रिया जारी रखते हुए तुम अपने कुटुम्ब को प्रकाशित करों।

महात्मागांधी ने सन् 1908 में खादी की खोज लंदन में की जब वे दक्षिण अफ्रीका के एक प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने गए थे। खादी के जरिये उन्हे एक ऐसा औजार मिल गया जिसे उन्होने भावी वर्षो में स्वाभिमान और स्वराज की अलख जगाने में इस्तेमाल किया।

खादी गतिविधियों को औपचारिक रूप तब प्राप्त हुआ जब अखिल भारतीय चरखा संघ का सन् 1925 में गठन हुआ। इसकी स्थापना के बाद अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ गठित किया गया। सन् 1953 में इसे बदलकर अखिल भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड बना दिया गया और आखिरकार संसद के एक अधिनियम के जरिये अप्रैल 1957 में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग अस्तित्व में आया ।

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास ग्रामीण और कृषि क्षेत्र की उत्पादन क्षमताओं दोहन और ग्रामीण उद्योग के विकास पर निर्भर करता है। अर्थशास्त्रीयों ने स्थानीय कच्चा माल और कौशल पर आधारित ग्रामीण उद्योगों के विकास को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का सम्पूर्ण विकास माना है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग संसद के एक अधिनियम (सन् 1958 के 61वें तथा 1987 के अधिनियम के भाग 12 तथा 2006 के अधिनियम क्रमांक 10 के द्वारा संशोधित) के द्वारा सृजित एक विधि विहित संगठन है। अप्रैल 1957 में अखिल भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग मंडल से कार्यभार अपने हाथ में लिया है।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग भारत सरकार द्वारा निर्मित एक वैधानिक निकाय है। यह भारत में खादी और ग्रामोद्योग से संबंधित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय (भारत सरकार) के अंदर आने वाली एक शीर्ष संस्था है। जिसका मुख्य उद्‌देश्य ''ग्रामीण इलाकों में खादी एवं ग्रामोद्योगों की स्थापना और विकास करने के लिए योजना बनाना प्रचार करना, सुविधाएँ और सहायता प्रदान करना है, जिसमें वह आवश्यकतानुसार ग्रामीण विकास के क्षेत्र में कार्यरत अन्य एजेंसियों की सहायता भी ले सकती है। इसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है जबकि अन्य संभागीय कार्यालय दिल्ली, भोपाल, बंगलोर, कोलकाता, मुंबई और गुवाहाटी में स्थित है। आयोग अपने विभिन्न कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करने के लिए 29 राज्यों में भी इसके कार्यालय है।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग ने अपने द्वारा निर्धारित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एवं अपने कार्य को सूचारू रूप से संचालन हेतु प्रत्येक राज्य में कार्यालय की स्थापना की है। छ.ग. राज्य का गठन 1 नवम्बर सन् 2000 को किया गया । यह देश के 26वॉ राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। छ.ग. राज्य में 12 जनवरी 2001 को राज्य कार्यालय खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग का शुभारंभ हुआ जिसे खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड कहा जाता है। धमतरी जिले के अस्तित्व में आने के बाद खादी एवं ग्रामोद्योग धमतरी जिला द्वारा संचालित होने लगा । जो जिला पंचायत के मार्गदर्शन में कार्य करता है।

खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा चलायी जाने वाली योजनाएँ–

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा मुख्य रूप से 3 योजनाएँ चलायी जाती है :–

1. **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम** :– भारत सरकार (खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग) की यह प्रायोजित योजना है। इसके अंतर्गत किसी भी ग्रामोद्योग इकाई स्थापित करने के लिये रू. 25.00 लाख तक लागत की परियोजनाएँ स्वीकार होती है। जिसमें सामान्य वर्ग के पुरूष हितग्राही को 10% तथा अन्य वर्गो एवं सामान्य वर्ग के महिला हितग्राही को 5% विनियोजित करना होता है। इस प्रकार मात्र 65% बैंक ऋण होता है जिसे 7 वर्षों में आसान किस्तों में ब्याज सहित वापस करना होता है।

2. **परिवार मूलक योजना** :– यह योजना राज्य शासन द्वारा आयोजित योजना है। इसके अंतर्गत रूपये 1.00 लाख तक लागत की छोटी ईकाईयॉ स्थापित करायी जाती है। जो अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/ अन्य पिछडा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले हितग्राहियों को लाभान्वित कराया जाता है। इसके तहत 50% अधिकतम रूपये 13500.00 बतौर अनुदान प्रदान किया जाता है।

3. **कारिगर प्रशिक्षण योजना** :– स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए कारिगर प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रत्येक जिलों में लक्ष्य निर्धारित कर आयोजन किया जाता है। जिसमें बेरोजगार युवक–युवतियॉ प्रशिक्षण में शामिल होकर नवीन उद्योगों की स्थापना कर सकें।

प्रस्तुत अध्ययन में तीनों योजनाओं का वर्णन किया जायेगा। अतः मेरे अध्ययन का विषय यह जानने का है कि ग्रामीण विकास में इन योजनाओं में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड का क्या योगदान है।

शोध विषय का चयन :–

आर्थिक विकास की प्रक्रिया तथा औद्योगीकरण के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार प्राप्ति हेतु शहर की ओर पलायन की प्रवृत्ति छत्तीसगढ़ मे ंभी होने लगी है। जिसे रोकने के लिए शासन द्वारा छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ शहरी क्षेत्रों में भी बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराने स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने और उनमें योग्यता व कौशल का निर्माण कर रोजगार के अवसर में वृद्धि करने के उद्‌देश्य से ''खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड'' की योजनाओं को लागू किया गया।

खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की योजनाओं का क्रियान्वयन उनके प्रावधानों के अनुसार किया जा रहा है अथवा नहीं, यह आयोग जिन लक्ष्यों एवं उद्‌देश्यों को लेकर राज्य में प्रारंभ किया गया है, उन लक्ष्यों व उद्‌देश्यों की प्राप्ति में वह कितना सफल रहा तथा उसके क्रियान्वयन में क्या कठिनाईयॉ आयी और इस पर क्या सुधार की आवश्यकता है, यह अध्ययन का विषय है।

केन्द्र, राज्य व स्थानीय सरकारों ने ग्रामीण एवं शहरी बेरोजगारों की समस्याओं के सुधार के लिए खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा जो प्रयास किया जा रहा है, उसका वास्तव में क्या प्रभाव हुआ है, इसका अध्ययन करने हेतु शोध विषय के रूप में इसका चयन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :–

छत्तीसगढ़ के सभी 27 जिलों में स्थित खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की छ.ग. के आर्थिक विकास में भूमिका का अध्ययन करना मेरे अध्ययन क्षेत्र में शामिल है, किन्तु अध्ययन के क्षेत्र को सीमित करते हुए धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग की भूमिका का अध्ययन किया जायेगा। अध्ययन का काल खण्ड 2001–02 से 2010–11 रखा गया है।

छत्तीसगढ़ की राजधानी से दक्षिण की ओर धमतरी जिला स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 4081.93 वर्ग कि0मी0 है। वर्ष 2011 की कुल जनसंख्या 799199 (लाख) जिसमें अनुसूचित जनजाति 55944, अनुसूचित जाति 210189 (लाख) ग्रामीण जनसंख्या 650045 (लाख) तथा शहरी जनसंख्या 149154 (लाख) है। धमतरी जिला की स्थापना 6 जुलाई 1998 को हुई । धमतरी जिले में 4 तहसील, धमतरी, कुरूद, मगरलोड, नगरी है। धमतरी एक ऐसा जिला है, जहॉ अनेक उद्योग जैसे – पोहा मिल, सॉ मिल, ट्रेक्टर ट्राली उद्योग, अगरबत्ती निर्माण लाख प्रोसेसिंग उद्योग तथा छ.ग. राज्य में सर्वाधिक राईस मिल धमतरी जिले में है, जिससे कृषि सम्पन्नता प्रतीत होती है, जो धमतरी जिले की आर्थिक विकास में अहम भूमिका रखते है।

खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के कार्यो का अध्ययन एक विषय बन गया है, जिस पर अनुसंधान एवं सर्वेक्षण करने तथा प्रशासनीक खोजबीन करने की व्यापक संभावनाऍ एवं सुविधाऍ विद्यमान है। छ.ग. तथा जिले के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग की भूमिका से दूरगामी परिणाम एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है, जिले के विकास में इसके योगदान को पृथक नहीं किया जा सकता।

यह शोध आयोग की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का एक लघु शोध करने का प्रयास है। विभिन्न शोध सर्वेक्षण से प्राप्त परिणाम एवं निष्कर्षों में सैद्धांतिक, नीतिगत एवं कार्यात्मक पहलुओं के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आ सकेंगे जो उपयोगी सिद्ध होंगे ।

अध्ययन की सीमाएँ :–

खादी एवं ग्रामोद्योग का कार्यक्षेत्र विशाल है इसके सम्पूर्ण पहलुओं का अध्ययन कर पाना एक व्यक्ति विशेष के लिए दुष्कर कार्य सिद्ध होगा, अतः अध्ययन के क्षेत्र एवं अध्ययन अवधि की सीमाएँ निर्धारित करने के साथ–साथ खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों में से केवल तीन विशिष्ट कार्यक्रमों यथा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, परिवार मूलक एवं कारिगर प्रशिक्षण योजना का विशेष अध्ययन प्रस्तुत शोध कार्य में किया जावेगा।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन का अध्ययन कर छ.ग. राज्य के आर्थिक विकास में इन योजनाओं की भागीदारी क विश्लेषण करना है। इस आधार पर अध्ययन के उद्देश्य को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है :–

1. छ.ग. के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की भूमिका का अध्ययन एवं मूल्यांकर करना ।
2. छ.ग. के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, परिवार मूलक योजना एवं कारिगर प्रशिक्षण योजना का मूल्यांकन करना ।
3. धमतरी जिले में छ.ग. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना ।
4. धमतरी जिले में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रमों, परिवार मूलक योजना एवं कारिगर प्रशिक्षण योजना का मूल्यांकन करना ।
5. धमतरी जिले में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के द्वारा रोजगार की संभावनाओं को ज्ञात करना।
6. धमतरी जिले में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा व्यवसायिक दृष्टिकोण में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।
7. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के माध्यम से धमतरी जिले में ग्रामीणों महिलाओं और युवाओं की उद्यमों में भागीदारी को ज्ञात करना ।
8. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा भविष्य की योजनाओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करना।
9. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की योजनाओं के भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है, ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऍ :–

किसी भी समस्या के संबंध में शोधार्थी के मन मस्तिष्क में कुछ पूर्व धारणाऍ व परिकल्पनाऍ होना स्वाभाविक है। ऐसी धारणाऍ व परिकल्पनाऍ शोधार्थी के उस क्षेत्र विशेष में ज्ञान अनुभव व अवलोकन पर आधारित होता है। खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के माध्यम से छ.ग. के आर्थिक विकास का मूल्यांकन करने के लिए निर्धारित परिकल्पनाऍ निम्न प्रकार है :–

1. छ.ग. के आर्थिक विकास में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।
2. छ.ग. में ग्रामीण महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं की उद्यमों में भागीदारी का महत्वपूर्ण कारक छ.ग. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड है।
3. छ.ग. में खादी एवं ग्रामोद्योग की योजनाओं से रोजगार की पर्याप्त संभावनाऍ है।
4. धमतरी जिले में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित योजनाऍ जिले के आर्थिक विकास में सहायक है।
5. छ.ग. खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए धमतरी जिले में अनुकुल वातावरण है।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन पर परिकल्पनाओं की जॉच कर निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया जायेगा ।

अध्ययन का महत्व :–

आज संपूर्ण भारतवर्ष में निर्धनता, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि, खाद्यान्न समस्या ने नित नई समस्याओं को जन्म दिया है। विश्व बैंक के अध्ययन के अनुसार भारत में 37% जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। देश में बेरोजगारी की दर 7.8% है। भारत में भूख एवं कुपोषण से प्रभावित लोगों की संख्या 23 करोड 30 लाख (विश्व में सर्वाधिक) है । कार्यशील जनसंख्या में महिला श्रमिकों का अनुपात 24.43% है। अतः देश की जनसंख्या को मानव संसाधन के रूप में विकसित कर आर्थिक विकास की घटक बनाने के लिये साक्षरता के साथ रोजगार शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है। इसके लिए सुनियोजित आर्थिक ढांचे के निर्माण में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की प्रभावशाली भूमिका है।

उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन :–

किसी भी शोध अध्ययन के प्रारंभ करने के पूर्व उस विषय से संबंधित साहित्य का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे न केवल विषय को समझने में मदद मिलती है, बल्कि उस विषय पर हुए अनुसंधानों की जानकारी भी प्राप्त होती है, जो शोध अध्ययन को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। प्रस्तुत अध्ययन के विषय से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों की विवरण निम्नानुसार है :–

1. कमल कुमार बेगानी ने अपने अध्ययन ''छ.ग. का आर्थिक विकासः विश्लेषणात्मक अध्ययन'' में कहा है कि छ.ग. के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनो ंसे परिपूर्ण प्रबल सम्भावनाएँ मौजूद है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यवस्थित समूह रचना अपनाकर प्रभावी क्रियान्वयन हेतु बेहतर प्रशासन व्यवस्था तथा जनता की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सकें।
2. राजेश कुमार अग्रवाल ने अपने प्रस्तुत शोध अध्ययन '' मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री रोजगार योजना के हितग्राहियों का आर्थिक अध्ययन (रायपुर जिलें के विशेष संदर्भ) में अपने निष्कर्ष को दो भागों में विभक्त किया।
    1. मध्यप्रदेश में योजना का क्रियान्वयन व स्थिति।
    2. रायपुर जिले में योजना का क्रियान्वयन व स्थिति। जिसके अंतर्गत हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया गया व अ.ज.जा., अ.जा. व अ.पि.व. श्रेणी में विभाजित कर उन्हे सूविधाएँ विभाजित की गई का अध्ययन प्रस्तुत है।
3. कु. सरस्वती शर्मा ने 1992 में अपने शोध अध्ययन '' खादी ग्रामोद्योग मध्यप्रदेश में खादी ग्रामोद्योग कमीशन की पॉच उत्पादन एवं विपणन इकाईयों का आर्थिक अध्ययन'' में खादी की उत्पत्ती की जानकारी दी है तथा रायपुर जिले को संदर्भ मानते हुए ग्राम सेवा समिति द्वारा किये जाने वाले विपणन के पॉच इकाई का पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शोध प्रविधि :–

अध्ययन के उद्देश्यों की दृष्टिकोण से शोध प्रविधि को एक ऐसा स्वरूप प्रदान किया गया है कि गहन अध्ययन संभव हो सके। खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के कार्यो का मूल्यांकन करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक संमको को आधार माना गया है। प्राथमिक संमको के स्त्रोत मुख्य रूप से दैव निदर्शन पद्धति से हितग्राहियों का चयन कर उनसे संबंधित जानकारी, सूचना, अनुसूची, व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं अवलोकन विधि द्वारा प्राप्त की जायेगी । शोध विषय से संबंधित प्राथमिक समय हितग्राहियों के समक्ष जा कर प्राप्त किये जायेगें तथा द्वितीयक समकों को भी ध्यान में रखा जायेगा ।

1. प्राथमिक समंक – शोधकर्ता प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अवलोकन के द्वारा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की योजनाऐं द्वारा लाभान्वित हितग्राहियों से साक्षात्कार, प्रश्नावली अनुसूची के द्वारा गहनता से अध्ययन किया जाएगा ताकि अध्ययन के उद्देश्य के करीब पहुॅचने का प्रयास किया जा सकें।

2. द्वितीयक संमक – द्वितीयक समंक के माध्यम से शोधकर्ता खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा प्रकाशित पत्रिकाऍ, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड व जिला पंचायत द्वारा निकाले जाने वाले दस्तावेजों व लेख, ऑकड़ों, समाचार पत्र, कुरूक्षेत्र, राष्ट्रीय क्षेत्रीय व दैनिक समाचार पत्रों से प्रकाशित व अप्रकाशित, सम्पादकीय में प्रकाशित होने वाली जानकारी के आधार पर कार्यालयों में जाकर, संग्रहण, ऑकड़ों, समंकों तथा सार्थकता परीक्षण सह संबंध गुणांक के माध्यम से निष्कर्ष के सत्यता के करीब पहॅुचनें का प्रयास किया जाएगा ।

प्रस्तावित शोध कार्य के संभावित परिणाम –

प्रस्तावित शोध कार्य के संभावित परिणाम के संबंध में मेरी यह प्रत्याशा है कि छ.ग. जैसे प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण राज्य में पर्यावरणीय हितों की रक्षा करते हुए लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना रोजगार सृजन की दृष्टिकोण से उपयुक्त रहेगा। खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, परिवार मूलक योजना एवं कारिगर प्रशिक्षण योजना बहुसंख्यक आबादी को रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम है, और जिससे धमतरी जिले की एवं छ.ग. राज्य के आर्थिक विकास की अपार संभावनाऍ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :—

1. दत्त रूद्र एवं सुंदरम भारतीय अर्थव्यवस्था —एसचंद पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. जी.एस. सुधा व्यापारिक उद्यमिता का विकास —रमेश बुक डिपो, जयपुर
3. गुप्ता के.एल. विकास व नियोजन का अर्थशास्त्र —साहित्य भवन आगरा
4. गुप्ता डॉ. एस.सी. आधुनिक अर्थव्यवस्था — श्री पब्लिशर्स, जयपुर
5. गुप्ता डॉ एस.सी. आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था —श्री पब्लिशर्स, जयपुर
6. जैन डॉ. एस.सी. विपणन प्रबंध — साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
7. जोशी बाबूराम ग्रामोद्योग से ग्राम राज्य — M.P.L.T. प्रकाशन मानकचंद बुक डिपो उज्जैन व इन्दौर
8. कोठारी आर.सी. शोध प्रविधि — एमचंद एंड कंपनी, नई दिल्ली
9. कोठारी आर.सी. रिसर्च मैथ्योडोलॉजी — एम.चांद एण्ड कम्पनीज नई दिल्ली
10. मिश्र जगदीश नारायण भारतीय अर्थव्यवस्था — किताब महल, इलाहाबाद—2001
11. मुखर्जी डॉ. आर.एन. सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोध प्रविधि — विवेक प्रकाशन दिल्ली
12. पाटनी आर.एल. औद्योगिक अर्थशास्त्र, — गोयल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ—1970
13. पाटनी आर.एल. भारतीय उद्योगो का संगठन — प्रबंध व वित्त, गायेल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ — 1970
14. राय, अग्रवाल, पारसनाथ—लक्ष्मीनारायण, अनुसंधान परिचय, —साहित्य भवन आगरा
15. शुक्ल एस.एम. सांख्यिकीय के सिद्धांत — साहित्य भवन, आगरा
16. शुक्ला डॉ. एम.बी. भारत में लोक उपक्रम
17. सोनी आर.एन. कृषि अर्थशास्त्र के मुख्य विषय — विशाल पब्लिकेशन कम्पनी
18. वर्मा भगवान सिंह छत्तीसगढ़ का इतिहास — म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी
19. वर्मा भगवान सिंह छत्तीसगढ़ का इतिहास — म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, ज्ञानोदय प्रकाशन

पत्रिकाएँ –

1. अर्थव्यवस्था अवलोकन, मासिक पत्रिका धनकर पब्लिशिंग
2. भारत की अर्थव्यवस्था, प्रतियोगिता साहित्य सीरिज आगरा
3. बिजनेस भास्कर, नई दुनिया, दैनिक भास्कर पत्र
4. छत्तीसगढ़ विवेक, कल्याण अध्ययन, विश्लेषण एण्ड अनुसंधान केन्द्र
5. दैनिक भास्कर, दैनिक समाचार पत्र
6. धरोहर, धमतरी नगर पालिका के 125वें स्थापना दिवस पर प्रकाशित स्मारिका
7. जागृति, मासिक पत्रिका, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग मुम्बई
8. जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2011
9. खादी ग्रामोद्योग, अर्थ विषयक पत्रिका खादी, खादी ग्रामोद्योग आयोग
10. कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका
11. लघु उद्योग परिप्रेक्ष्य
12. नवभारत, दैनिक समाचार पत्र
13. प्रतियोगिता दर्पन, मासिक पत्रिका
14. शोध प्रकल्प, त्रैमासिक पत्रिका रायपुर
15. शोध उपक्रम, त्रैमासिक पत्रिका रायपुर
16. उद्यमिता समाचार
17. उद्योग मार्गदर्शिका, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र रायपुर
18. योजना, मासिक पत्रिका

निर्देशक
डॉ. चन्द्रशेखर चौबे
प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, भखारा,
धमतरी (छ.ग.)
PRINCIPAL
Govt. College Bhakara

सह निर्देशक
डॉ. एस.एस.खनूजा
प्राचार्य
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
PRINCIPAL,
DURGA MAHAVIDYALAYA,
RAIPUR (C.G.)

शोधार्थी
कु. सारिका रजक
पोस्टआफिस वार्ड
धमतरी (छ.ग.)